श्रीलगुरुदेव

SGD

।।श्रीश्रीगुरु – गौरांगौ – जयतः।।

साधन – संकेत

श्रीलगुरुदेव

www.SrilaGurudeva.org

जय – ध्वनि

जय श्रीश्रीगुरु – गौरांग – गान्धर्विका – गिरिधारी
जी की जय

जय श्रीश्रीगुरु – गौरांग – गान्धर्विका – गिरिधारी
श्रीराधामदनमोहन पंचतत्वात्मक
श्रीगौरहरि जी की जय

जय नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद
परमहंस अष्टोत्तरशत
श्री श्रीमद् भक्ति बल्लभ तीर्थ गोस्वामी
महाराज जी की जय

जय श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ के प्रतिष्ठाता
नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद
परमहंस अष्टोत्तरशत
श्री श्रील भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज जी की जय

जय श्रीचैतन्य मठ एवं
गौड़ीय मठ के प्रतिष्ठाता
जय नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद
परमहंस अष्टोत्तरशत
श्री श्रील भक्ति सिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी
प्रभुपाद जी की जय

जय नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद
परमहंस श्री श्रील गौरकिशोरदास बाबा जी
महाराज जी की जय

जय नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद
श्री श्रील सच्चिदानन्द भक्तिविनोद ठाकुर
जी की जय

जय नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद
परमहंस वैष्णव सार्वभौम
श्री श्रील जगन्नाथदास बाबा जी महाराज जी
की जय

जय श्री श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभु
जी की जय

जय श्री श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर
जी की जय

जय श्री श्रील नरोत्तम ठाकुर जी की जय

जय श्री श्रील श्यामानन्द प्रभु जी की जय
जय श्री श्रील श्रीनिवासाचार्य प्रभु
जी की जय

जय श्री श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी
जी की जय

जय श्रीरूप-सनातन-भट्ट रघुनाथ-
श्रीजीव-गोपाल भट्ट दास रघुनाथ
षड्गोस्वामी जी की जय
जय श्री श्रीलस्वरूप दामोदर गोस्वामी
जी की जय

जय श्री श्रील राय रामानन्द जी की जय

जय श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु-नित्यानन्द।
श्रीअद्वैत गदाधर श्रीवासादि-गौरभक्तवृन्द
जी की जय

जय श्रीराधा-मदनमोहन जी की जय

जय श्रीराधा-गोविन्द जी की जय

जय श्रीराधा-गोपीनाथ जी की जय

जय अन्तर्द्वीप श्रीधाम-मायापुर, सीमन्तद्वीप,
गोद्रुमद्वीप, मध्यद्वीप, कोलद्वीप, ऋतुद्वीप,
जह्नुद्वीप, मोदद्रुमद्वीप, रुद्राद्वीपात्मक
श्रीनवद्वीप धामकी जय

जय द्वादशवन – यमुना – मथुरा – वृन्दावन – गोवर्द्धन – राधाकुण्ड – श्यामकुण्डात्मक – श्रीब्रजमण्डल की जय

जय श्री पुरूषोत्तम धाम की जय

जय श्रीबलदेव – श्रीसुभद्रा एवं श्रीजगन्नाथदेव जी की जय

जय श्रील प्रभुपाद जी के आविर्भाव पीठ की जय

जय सर्व विघ्नविनाशनकारी श्रीनृसिंह देव जी की जय

जय श्रीप्रह्लाद महाराज जी की जय

जय श्री क्षेत्रपाल शिव जी की जय

जय श्री विश्ववैष्णव राजसभा की जय

जय चारों धाम की जय

जय चारों वैष्णव सम्प्रदाय की जय

जय श्री मध्व–रामानुज विष्णुस्वामी–
निम्बादित्य चारों वैष्णव आचार्यों की जय

जय आकर मठराज श्रीचैतन्य मठ की जय

जय श्रीगौड़ीय मठ और अन्याय शाखा मठ
समूह की जय

जय श्रीधाम–मायापुर ईशोद्यानस्थित मूल
श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ और तत्शाखा मठसमूह
की जय

जय श्रीहरिनाम संकीर्तन की जय

जय अनन्त कोटि वैष्णववृन्द की जय

निताई गौर प्रेमानन्दे हरि हरि बोल।

नमः ॐ विष्णुपादाय श्रीगौरप्रियमूर्तये।
श्रीमते भक्तिवल्लभ–तीर्थ–गोस्वामिनामिने।
मायावाद विखण्डनं गुरार्वाण्यनुकीर्तनम्।
पश्चदेशोपदेशकं प्रन्ननदनं सदा।।
शुद्ध–भक्ति प्रवाहकं शुद्ध–भक्ति–भगीरथम्।
भक्तिदयित माधवाभिन्न तनुं नमाम्यहम्।।
नामसंकीर्तनामृत रसास्वादविधायकम्।
कृष्णाम्नायकृपामूर्तिं आचार्यं तं नमाम्यहम।
गौर–नाम प्रचारर्दं भक्तसेवानुकांक्षिणम्।
सतीर्थ्यप्रीतिसद्भावं नौमि तीर्थं महाशयम्।।

नमः ॐ विष्णुपादाय रूपानुग प्रियाय च।
श्रीमते भक्तिदयितमाधवस्वामी नामिने।।
कृष्णाभिन्न–प्रकाश–श्रीमूर्त्तये दीनतारिणे।
क्षमागुणावताराय गुरवे प्रभवे नमः।।
सतीर्थप्रीतिसद्धर्म –गुरुप्रीति प्रदर्शिने।
ईशोद्यान–प्रभावस्य प्रकाशकाय ते नमः।।
श्रीक्षेत्रे प्रभुपादस्य स्थानोद्धार–सुकीर्तये।
सारस्वत गणानन्द सम्वर्धनाय ते नमः।।
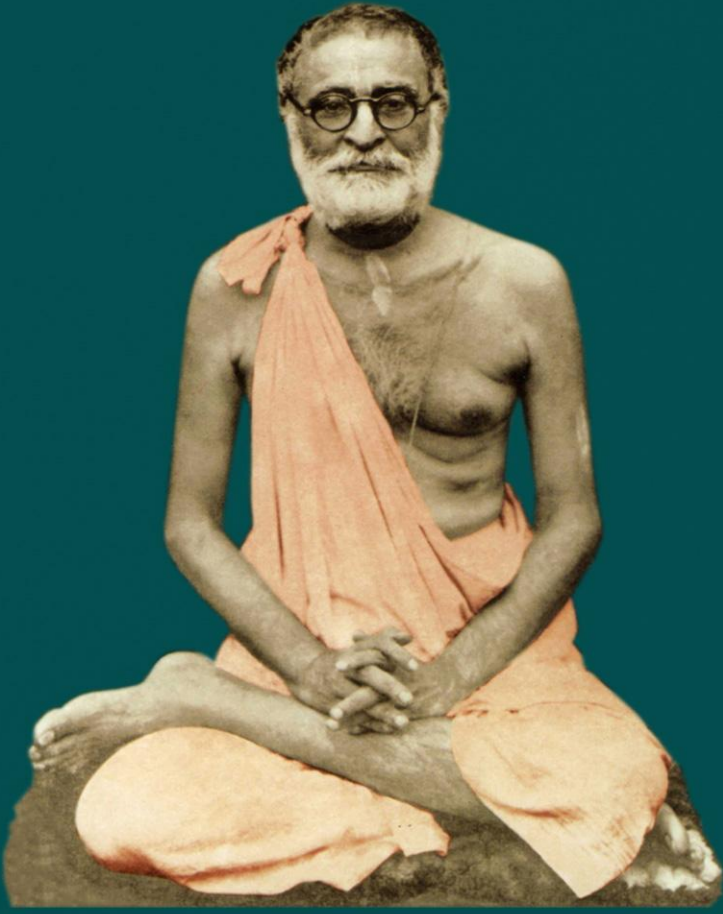
नमः ॐ विष्णुपादाय कृष्ण-प्रेष्ठाय भूतले।
श्रीमते भक्तिसिद्धान्त-सरस्वतीति-नामिने।।
श्रीवार्षभानवीदेवी-दयिताय कृपाब्धये।
कृष्ण-सम्बन्ध-विज्ञान-दायिने प्रभवे नमः।।
माधुर्य्योज्जवल-प्रेमाढ्य-श्रीरूपानुग-भक्तिद।
श्रीगौर-करुणा-शक्ति-विग्रहाय नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते गौर-वाणी श्रीमूर्त्तये-दीनतारिणे।
रूपानुग-विरुद्धापसिद्धान्त-ध्वान्त-हारिणे।।

श्रील – गौरकिशोर – वन्दना

नमो गौरकिशोराय साक्षाद्वैराग्य – मूर्त्तये।
विप्रलम्भ – रसाम्भोधे! पादाम्बुजाये ते नमः।।

श्रील – भक्तिविनोद – वन्दना

नमो भक्तिविनोदाय सच्चिदानन्द – नामिने।
गौरशक्ति – स्वरूपाय रूपानुगवराय ते।।

श्रील – जगन्नाथदास – वन्दना

गौराविर्भाव – भूमेस्त्वं निर्देष्टा सज्जन – प्रियः।
वैष्णव – सार्वभौम – श्रीजगन्नाथाय ते नमः।।

श्रीवैष्णव – वन्दना

वाञ्छा – कल्पतरुभ्यश्च कृपा – सिन्धुभ्य एव च।
पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमो नमः।।

श्रीपंचतत्त्व–प्रणामः

पंचतत्त्वात्मकं कृष्णं भक्तरूप–स्वरूपकम्।
भक्तावातारं भक्तारव्यं नमामि भक्तशक्तिकम्।।

श्रीगौरांग–प्रणामः

नमो महावदन्याय कृष्णप्रेम–प्रदाय ते।
कृष्णाय 'कृष्णचैतन्य'–नाम्ने गौरत्विषे नमः।।

श्रीनित्यानन्द–प्रणामः

संकर्षणः कारण–तोयशायी
गर्भोदशायी च पयोब्धिशायी।
शेषश्च यस्यांशकलाः
स नित्यानन्दारव्य–रामः शरणं ममास्तु।।

श्रीअद्वैत–प्रभु–प्रणामः

महाविष्णुर्जगत्कर्ता मायया यः सृजत्यदः।
तस्यावतार एवायमद्वैताचार्य ईश्वरः।।
अद्वैतं हरिणाद्वैताचार्यं भक्तिशंसनात्।
भक्तावतारमीशं तमद्वैताचार्यमाश्रये।।

श्रीगदाधर – प्रणामः

श्रीह्लादिनी – स्वरूपाय गौरांग – सुहृदे सते।
भक्तशक्ति – स्वरूपाय गदाधर! नमोऽस्तु।।

श्रीवास – प्रणामः

श्रीवास – पण्डितं नौमि गौरांगप्रियपार्षदम्।
यस्य कृपा – लवेनापि गौरांगे जायते रतिः।।

श्रीकृष्ण – प्रणामः

हे कृष्ण! करुणा – सिन्धो दीनबन्धो जगतपते!
गोपेश गोपिकाकान्त राधाकान्त! नमोऽस्तु ते।।

श्रीराधा – प्रणामः

तप्त – काञ्चन – गौरांगि राधे वृन्दावनेश्वरि!
वृषभानुसुते देवी प्रणमामि हरिप्रिय।।

श्रीसम्बन्धाधिदेव – प्रणामः

जयतां सुरतौ पंगोर्मम मन्द – मतेर्गती।
मत्सर्वस्व – पदाम्भोजौ राधा – मदनमोहनौ।।

श्रीअभिधेयाधिदेव – प्रणामः

दीव्यद् – वृन्दारण्य – कल्पद्रुमाधः
श्रीमद्रत्नागार – सिंहासनस्थौ।
श्रीश्रीराधा – श्रील – गोविन्ददेवौ,
प्रेष्ठालीभिः सेव्यमानौ स्मरामि।।

श्रीप्रयोजनसधिदेव – प्रणामः

श्रीमान् रास – रसारम्भी वंशीवट – तटस्थितः।
कर्षण् वेणु –स्वनैर्गोपीर्गोपीनाथः श्रियेऽस्तु नः।।

श्रीतुलसी – प्रणामः

भक्त्या विहीना अपराधलक्षैः,
क्षिप्ताश्च कामादि तरंगमध्ये।
कृपामयि! त्वां शरणं प्रपन्ना,
वृन्दे! नुमस्ते चरणारविन्दम्।।
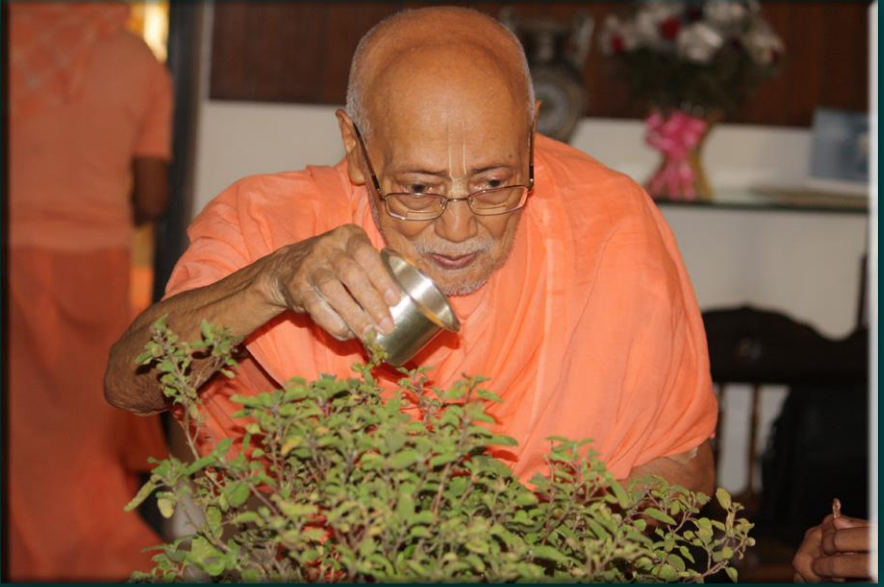
वृन्दाये तुलसी–देव्यै प्रियायै केशवस्य च।
कृष्णभक्ति–प्रदे देवि सत्यवत्यै नमो नमः।।

पवित्र तीर्थ के जल को छोड़कर किसी भी जल से सन्ध्या या आचमन करना उचित नहीं है, हाँ, यदि तीर्थ जल न मिलता हो तो ऐसे समय पर साधक को चाहिए कि वह पंचपात्र में रखे जल को मन्त्रों द्वारा पवित्र कर ले।

जल पवित्र करने की विधिः अपने दाहिने हाथ को उल्टा करके अर्थात हथेली का मुँह की ओर रखकर मध्यमा अंगुली के पिछले हिस्से को जल में स्पर्श करते हुए समस्त तीर्थों का नीचे लिखे मन्त्र द्वारा आवाहन करे–जैसा कि चित्र में दिखाया गया है:

जल पवित्र करने हेतु मन्त्रः

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे सिन्धो कावेरी जलेऽस्मिन सन्निधिं कुरू।।

साधक को इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि पंचपात्र के जल में नाखुनों का स्पर्श न हो, क्योंकि नाखुनों के द्वारा स्पर्शित जल को अपवित्र माना जाता है जो कि पूजा इत्यादि शुभ कार्यो में नहीं लगता।

मन्त्र पढ़ने के बाद बायें हाथ की हथेली में उसी जल में से थोड़ा सा जल लेकर उसमें गोपीचन्दन, उसके अभाव में तुलसी का मिट्टी घिसकर उससे केशवादि द्वादश मन्त्र से ललाटादि द्वादश अंगों में ऊर्ध्वपुन्ड्र (तिलक) या हरिमन्दिर की रचना करनी चाहिए।
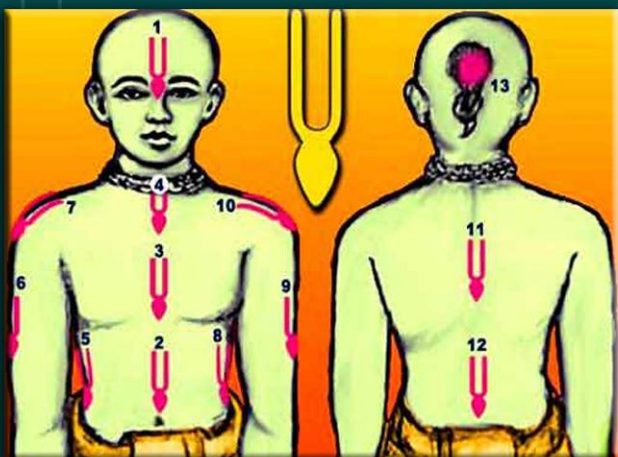
ललाटे केशवं ध्यायेन्नारायणमथोदरे।
वक्षःस्थले माधवं तु, गोविन्दं कण्ठकूपके।।
विष्णुं च दक्षिणे कुक्षौ बाहो च मधुसूदनम्।
त्रिविक्रमं कन्धरे तु, वामनं वामपार्श्वके।।
श्रीधरं वाम बाहौ तु, हृषीकेशं च कन्धरे।
पृष्ठे तु पद्मनाभं च कट्या दामोदरं न्यसेत्।
तत्प्रक्षालनतोयं तु वासुदेवाय मूर्धनि।।
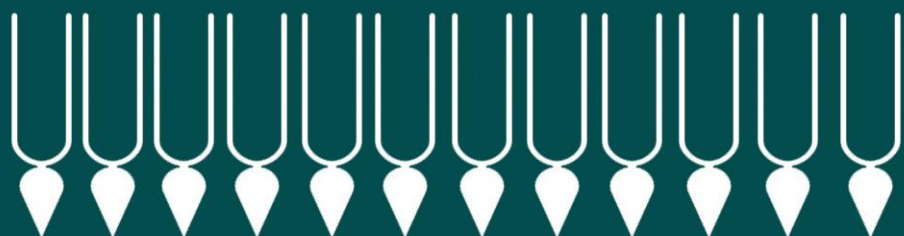
1. ललाट में–श्रीकेशवाय नमः।

2. उदर में–श्रीनारायणाय नमः।

3. वक्षः स्थल में–श्रीमाधवाय नमः।

4. कण्ठ में–श्रीगोविन्दाय नमः।

5. दक्षिणकुक्षि में–श्रीविष्णवे नमः।

6. दक्षिणबाहु में–श्रीमधुसूदनाय नमः।

7. दक्षिणस्कन्ध में–श्रीत्रिविक्रमाय नमः।

8. वामकुक्षि में–श्रीवामनाय नमः।

9. वामबाहु में–श्रीश्रीधराय नमः।

10. वामस्कन्ध में–श्रीहृषीकेशाय नमः।

11. पीठ में–श्रीपद्मनाभाय नमः।

12. कटि में–श्रीदामोदरराय नमः।

अन्त में बाऐं हाथ में बचे हुए जल को ‘वासुदेवाय नमः’ कह कर मस्तक में देना चाहिए। तिलक करने के पश्चात आचमन अवश्य करना चाहिए आचमन की विधि इस प्रकार है–पहले वायें हाथ से पंचपात्र की चम्मच को पकड़े, उससे दाहिने हाथ की हथेली में जल डालकर उसे धो लें। इसके बादः

1. श्रीकेशवाय नमः।
2. श्रीनारायणाय नमः।
3. श्रीमाधवाय नमः।
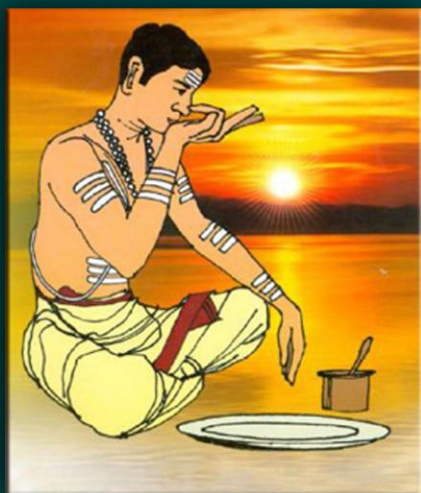
इन तीन मन्त्रों से तीन बार आचमन करें।
आचमन के बाद

तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयो,
दिवीव चक्षुराततम्।

इस श्लोक का पाठ करना चाहिये।

इसके बाद श्रीश्रीगुरु–गौराङ्ग–गान्धर्विका–गिरिधारी और तुलसी जी को प्रणाम करते हुए। पहले श्रद्धा के साथ श्रीगुरुदेव के ध्यान करके पञ्चतत्व व महामन्त्र का नाम कम से कम द्वादश बार कीर्तन करना चाहिए।

उसके बाद श्रीमालिका में निर्बन्ध पूर्वक (अर्थात् गुरुदेव जी द्वारा दी गयी माला संख्या पुर्वक) महामन्त्र अपराध–रहित होकर जप और कीर्तन करना चाहिए।

श्रीमालिका का तर्जनी से र्स्पश नहीं करना चाहिए व सुमेरु लंघन भी नहीं करना चाहिए।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

नाम – अपराध

साधुनिन्दा

शिवादि देववृन्द में श्रीकृष्ण से पृथक ईश्वर बुद्धि रखना।

गुरु अवज्ञा।

श्रुति – शास्त्र निन्दा।

नाम में अर्थवाद।

नाम के बल पर पाप बुद्धि।

श्रद्धाहीन जन को नाम उपदेश।

अन्य शुभ कर्मों के साथ नाम की बराबरी करना।

प्रमादद (दूसरी तरफ ध्यान देकर हरिनाम करना)।

श्रीनाम का महिमा श्रवण करने पर भी मैं और मेरी रूप देहात्मबुद्धि से युक्त होकर हरिनाम में प्रीति या अनुराग न करना।

हरिनाम भजन में जिस प्रकार अपराधों का विचार होता है, उसी प्रकार सेवापराध में भी अपराधों से मुक्त होना होगा।

01 यान व पादुका पहनकर श्रीमन्दिर में जाना।

02 भगवान के उत्सवों का अनुष्ठान न करना।

03 श्रीभगवद्विग्रह के सम्मुख प्रणाम न करना।

04 उच्छिष्ट व अशौच दशा में भगवान की वन्दना करना।

05 एक हाथ से प्रणाम करना।

06 श्रीभगवद्विग्रह के ठीक सम्मुख प्रदक्षिण करना अर्थात भगवद्विग्रह-विग्रह की तरफ पीठ करना।

07 श्रीभगवद्विग्रह की तरफ पैर फैलाना।

08 श्रीभगवद्विग्रह के सम्मुख घुटने बांधकर बैठना।

09 श्रीभगवद्विग्रह के आगे सोना या लेटना।

10 श्रीभगवद्विग्रह के आगे भोजन करना।

11 श्रीभगवद्विग्रह के सम्मुख ज़ोर से बोलना।

12 श्रीभगवद्विग्रह के आगे झूठ बोलना।

13 श्रीभगवद्विग्रह के आगे ग्राम्यकथा (घरेलु बातें) करना।

14 श्रीभगवद्विग्रह के आगे रोदन करना।

15 श्रीभगवद्विग्रह के आगे परस्पर कलह करना।

16 श्रीभगवद्विग्रह के आगे किसी को पीटना।

17 श्रीभगवद्विग्रह के सम्मुख किसी को आशीर्वाद करना।

18 श्रीभगवद्विग्रह के आगे दूसरे के प्रति कटू भाषण करना।

19 श्रीभगवद्विग्रह की कम्बल ओढ़कर सेवा-पूजा करना

20 श्रीभगवद्विग्रह के सामने किसी की निन्दा करना।

21 श्रीभगवद्विग्रह के सामने दुसरे की स्तुति करना।

22 श्रीभगवद्विग्रह के सामने अश्लील बातें करना।

23 श्रीभगवद्विग्रह के सम्मुख अधोवायु त्यागना।

24 शक्ति होते हूए भी सेवापुजा में सामान्य खर्च न करना।

25 भगवान को भोग लगाए बिना भोजन करना।

26 श्रीभगवद्विग्रह को मौसम के नये फलों का भोग न लगाना।

27 संगृहीत सामाग्री का पहला भाग खा-पीकर अवशिष्टांश भोग लगाना।

28 श्रीभगवद्विग्रह के सम्मुख दूसरे को प्रणाम करना।

29 श्रीभगवद्विग्रह के सम्मुख पीठ करके बैठना।

30 गुरु पुजा में गुरुजी का स्तव न करना।

31 गुरु जी के सामने अपनी प्रशंसा करना।

32 अन्य देवानिन्दा करना।

वराह-पुराण,
श्रीविग्रह-सेवा में 32 प्रकार के सेवापराध

वराह पुराण में अन्यान्य
जो अपराध कहे गये हैं,

1 राजान्न भक्षण करना।

2 अंधेरे में भगवान के विग्रह को स्पर्श करना।

3 शास्त्र विधि को छोड़कर भगवद्-विग्रह का अर्चन करना।

4 शयन के बाद भगवान को जगाने के लिये चुपचाप (वाद्य रहित होकर) मन्दिर का दरवाजा खोलना।

5 कुत्ते आदि की नजरों में पड़ा नैवेद्य भोग लगाना।

6 पुजा के समय बातचीत करना।

7 पुजा के समय मल त्यागने जाना।

8 गन्ध-माल्यादि न देकर धुप देना।

9 निषिद्ध पुष्पों द्वारा पुजा करना।

10 दन्त–मंजन किए बिना भगवद् विग्रह का स्पर्श या सेवा करना।

11 स्त्री संग के पश्चात् भगवद् विग्रह का स्पर्श या सेवा करना।

12 रजस्वला स्त्री को स्पर्श करके भगवद् विग्रह का स्पर्श या सेवा करना।

13 अनजाने व्यक्ति को स्पर्श भगवद् विग्रह का स्पर्श या सेवा करना।

14 शव को स्पर्श करके भगवद् विग्रह का स्पर्श या सेवा करना।

15 लाल कपड़े पहन कर भगवद् विग्रह की सेवा करना।

16 नीले कपड़े पहन कर भगवद् विग्रह की सेवा करना।

17 बिना धुले हुए वस्त्र पहन कर श्रीभगवद्-विग्रह की सेवा करना।

18 गन्दे कपड़े पहन कर भगवद् विग्रह की सेवा करना।

19 दुसरे के कपड़े पहन कर भगवद्-विग्रह की सेवा करना।

20 शव का दर्शन करने के बाद भगवद्-विग्रह की सेवा करना।

21 श्मशान में जाने के बाद भगवद्-विग्रह की सेवा करना।

22 भगवद्-विग्रह सेवा करते-करते क्रोध प्रकाशित करना।

23 अपान वायु परित्याग करके भगवद्-विग्रह की सेवा करना।

24 भोजन करने के एकदम पश्चात् श्रीभगवद् विग्रह की सेवा करना।

25 कुसुम्भ (नाटाकरन्चा) खाकर श्रीभगवद् विग्रह की सेवा करना।

26 हींग खाकर पहन कर भगवद् विग्रह की सेवा करना।

27 शरीर में तेल–मालिस के पश्चात श्रीहरि के विग्रह को स्पर्श करना।

श्रीगुरु – परम्परा

कृष्ण हैते चतुर्मुख, हय कृष्ण–सेवोन्मुख,
ब्रह्मा हैते नारदेर मति।
नारद हइते व्यास, मध्व कहे व्यासदास,
पूर्णप्रज्ञ पद्मनाभ–गति।।
नृहरि–माधव–वंशे, अक्षोभ्य–परमहंसे,
शिष्य बलि' अंगिकार करे।
अक्षोभ्येर शिष्य 'जय– तीर्थ नामे परिचय,
ताँ'र दास्ये ज्ञानसिन्धु तरे।।
ताँहा हैते दयानिधि, ताँ'र दास विद्यानिधि,
राजेन्द्र हइल ताँहा ह'ते।
ताँहार किंकर 'जय– धर्म' नामे परिचय,
परम्परा जान भालमते।।
जयधर्म–दास्ये ख्याति, श्रीपुरुषोत्तम–यति,
ताँ' ह'ते ब्रह्मण्यतीर्थ–सूरि।
व्यासतीर्थ ताँ'र दास, लक्ष्मीपति व्यासदास,
ताँहा ह'ते माधवेन्द्रपुरी।।

माधवेन्द्रपुरीवर– शिष्यवर श्रीईश्वर,
नित्ययनन्द, श्रीअद्वैत विभु।
ईश्वरपुरीके धन्य, करिलेन श्रीचैतन्य,
जगद्‌गुरु गौर–महाप्रभु।। 5

महाप्रभु श्रीचैतन्य, राधाकृष्ण नहे अन्य,
रुपानुग–जनेर जीवन।
विश्वम्भर–प्रियंकर, श्रीस्वरूपदामोदर,
श्रीगोस्वामी रूप–सनातन।। 6

रूपप्रिय महाजन, जीव रघुनाथ हन,
ताँर प्रिय कवि कृष्णदास।
कृष्णदास प्रियवर, नरोत्तम सेवापर,
याँ'र पद विश्वनाथ–आश।।

विश्वनाथ भक्तसाथ, बलदेव, जगन्नाथ,
ताँ'र प्रिय श्रीभक्तिविनोद।
महाभगवतवर, श्रीगौरकिशोर–वर,
हरि–भजनेते याँ'र मोद।।

‘श्रीवार्षभानवी’–वरा, सदा सेव्य–सेवापरा,

ताँहार ‘दयितदास’ नाम।

ताँहार परम प्रेष्ठ, रूपानुगजन श्रेष्ठ

माधव गोस्वामी गुणधाम।।

श्रीभक्तिदयित ख्याति, सतीर्थ सज्जने प्रीति,

दीन हीन अगतिर गति।

ताँर नित्य प्रियजन, श्रीभक्ति वल्लभ हन,

तीर्थ गोस्वामी भुवने ख्याति।

सदा काय, मनो वाक्ये, गुरु आज्ञा पालनेते,

याँहार सुदृढ़ अनुरक्ति।

एई सब हरिजन, गौरांगेर निज जन,

ताँदेर उच्छिष्टे मोर मति।।
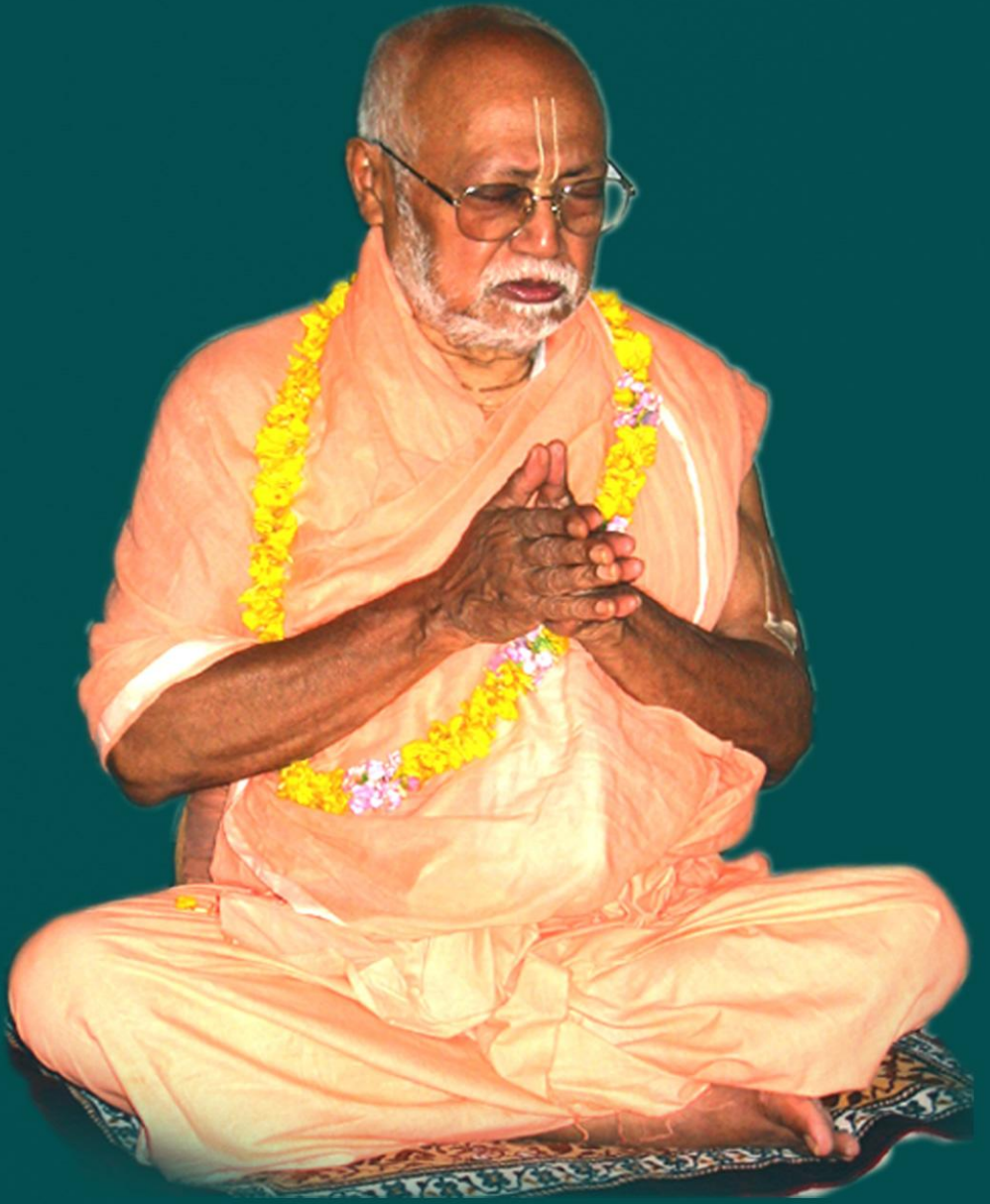
श्रीगुरुदेवाष्टकम्

SGD

संसार – दावानल – लीढ़ – लोक –
त्राणाय – कारुण्यघनाघनत्वम्।
प्राप्तस्य कल्याण – गुणार्णवस्य
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।। 1

महाप्रभोः कीर्त्तन – नृत्य – गीत –
वादित्रमाद्यन्मनसो रसेन।
रोमाञ्च – कम्पाश्रु – तरंग – भाजो
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।। 2

श्रीविग्रहाराधन – नित्य – नाना –
श्रृंगार – तन्मन्दिर – मार्ज्जनादौ।
युक्तस्य भक्तांश्च नियुञ्जतोऽपि
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।। 3

चतुर्विध – श्रीभगवत्प्रसाद –
स्वाद्वन्न – तृप्तान् हीरिभक्त – संघान्।
कृत्वैव तृप्तिं भजतः सदैव
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।। 4

श्रीराधिका – माधवयोरपार –
माधुर्य्य – लीला – गुण – रूप – नाम्नाम्।
प्रतिक्षणास्वादन – लोलुपस्य
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।। 5

निकुञ्जयुनो – रतिकेलि – सिद्ध्यै –
र्या यालिभिर्युक्तिरपेक्षणीया।
तत्रातिदाक्ष्यादतिवल्लभस्य
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।। 6

साक्षाद्धरित्वेन समस्त – शास्त्रै –
रुक्तस्तथा भाव्यत एव सद्भिः।
किन्तु प्रभोर्यः प्रिय एव तस्य
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।। 7

यस्य प्रसादाद् भगवत् – प्रसादो
यस्याप्रसादान्न गतिः कुतोऽपि।
ध्यायंस्तुवंस्तस्य यशस्त्रिसन्ध्यं
वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।। 8

श्रीमद्गुरोरष्टकमेतदुच्चै-

र्ब्राह्मो मुहूर्त्ते पठति प्रयत्नात्।

यस्तेन वृन्दावन-नाथ-साक्षात्-

सेवैव लभ्या जनुषौऽन्नत एव।। ९

श्रीवैष्णव – वन्दना

वृन्दावनवासी यत वैष्णवेर गण।
प्रथमे वन्दना करि सभार चरण।।
नीलाचल वासी यत महाप्रभुर गण।
भूमिते पड़िया वन्दों सबार चरण।।
नवद्वीपवासी यत महाप्रभुर भक्त।
सभार चरण वन्दों हइया अनुरक्त।।
महाप्रभुर भक्त जत गौड़देशे स्थिति।
सभार चरण वन्दों करिया प्रणति।।
ये देशे ये देशे वैसे गौरांगेर गण।
ऊर्ध्वबाहु करि वन्दों सभार चरण।।
हैयाछेन हइबेन प्रभुर यत दास।
सभार चरण बन्दों दन्ते करि' घास।।
ब्रह्माण्ड तारिते शक्ति धरे जने जने।
ए वेद पुराणे गुण गाय येबा शुने।।

श्रीवैष्णव–वन्दना

महाप्रभुर गण सब पतित पावन।

ताइ लोभे मुञि पापी लइनु शरण।।

वन्दना करिते मुञि कत शक्ति धरि।

तमो–बुद्धि–दोषे मुञि दम्भ मात्र करि।।

तथापि मूकेर भाग्य मनेर उल्लास।

दोष क्षमि’ मो–अधमे कर निज दास।।

सर्ववाञ्छा सिद्धि हय , यम–बन्ध छुटे।

जगते दुर्लभ हैया प्रेमधन लुटे।।

मनेर वासना पूर्ण अचिराते हय।

देवकी नन्दन दास एइ लोभे कय।।

श्रील तीर्थ गोस्वामी – द्वादशकम्

स्तव – कुसुमांजली

असमाहिनिवास हि पाठ्यरसे,

धनदातृ – शिरोमणि – पुत्रशुभम्।

शिवपूजन – साधन – शुद्धगुणं,

प्रणमामि सदा गुरु – तीर्थपदम्।। 1

जितकोमल – चम्पक – गौरतनुं,

मृदुहास्यमुखोज्ज्वल – तुष्टहृदम्।

शम – दैन्यगुणं यतिवेषधरं,

प्रणमामि सदा गुरु – तीर्थपदम्।। 2

प्रभुमाधवदेवक – शिष्यवरं,

गुरुगोष्ठि – समादर – दास्यपरम्।

सुजनादृत – शंसन – पूज्यपदं,

प्रणमामि सदा गुरु – तीर्थपदम्।। 3

विरहार्त्तगुरोर्गिरिराजतटे

भृगुपातयिहा रघुनाथसमम्।

हरिसेवक – पूरक – प्राणधृतं,

प्रणमामि सदा गुरु – तीर्थपदम्।। 4

अनुकार्यरतं प्रभुपादगृहे गुरु-
गौरजनेप्सित-कीर्तिधरम्।
विनयादिगुणैर्हरिबल्लभ तं
प्रणमामि सदा गुरु-तीर्थपदम्।। 5

गुरुगौरवभास्करदीप्तिनिभं,
मठमन्दिररक्षणयत्नयुतम्,
परमार्थरसामृतपानरतं,
प्रणमामि सदा गुरु-तीर्थपदम्।। 6

हरिकीर्त्तन-नर्त्तन-मत्तमतिं,
ब्रजभावविभावित गौरहृदम्।
गिरिराधन-मोदन-पर्वयुतं,
प्रणमामि सदा गुरु-तीर्थपदम्।। 7

प्रभुमाधवमीप्सित कृत्यकृतं,
चरणांकितगौरपदं सुकृतम्।
कुमुदाख्यवनासेवनं सुभगं,
प्रणमामि सदा गुरु-तीर्थपदम्।। 8

रघु – रूपक – भक्तिविनोद पथं,

भजनोर्ज्जित – नैष्ठिक – शन्दपदम्।

तरुधिकृत – शोभन – धैर्यधरं,

प्रणमामि सदा गुरु – तीर्थपदम्।। 9

मुखपद्मपुरीवचनाधरणं,

तव पश्चिमदेश – शुभं – गमनम्।

प्रतिपादन – गौरकथाममलां,

प्रणमामि सदा गुरु – तीर्थपदम्।। 10

रघुनाथसुजन्मतिथौ नवमीं,

सतिथौ जननं गुरु – तीर्थवरम्।

शुभदं शमदं रसदं सदयं,

प्रणमामि सदा गुरु – तीर्थपदम्।। 11

यति – तीर्थ – गुरो शिवकल्पतरो

कृपया क्षमतां वृजिनं सततम्।

शरणागतपालकपादविभो,

प्रणमामि सदा गुरु – तीर्थपदम्।। 12

श्रील माधवगोस्वामी –
पादपद्मस्तवकैकाशकम्
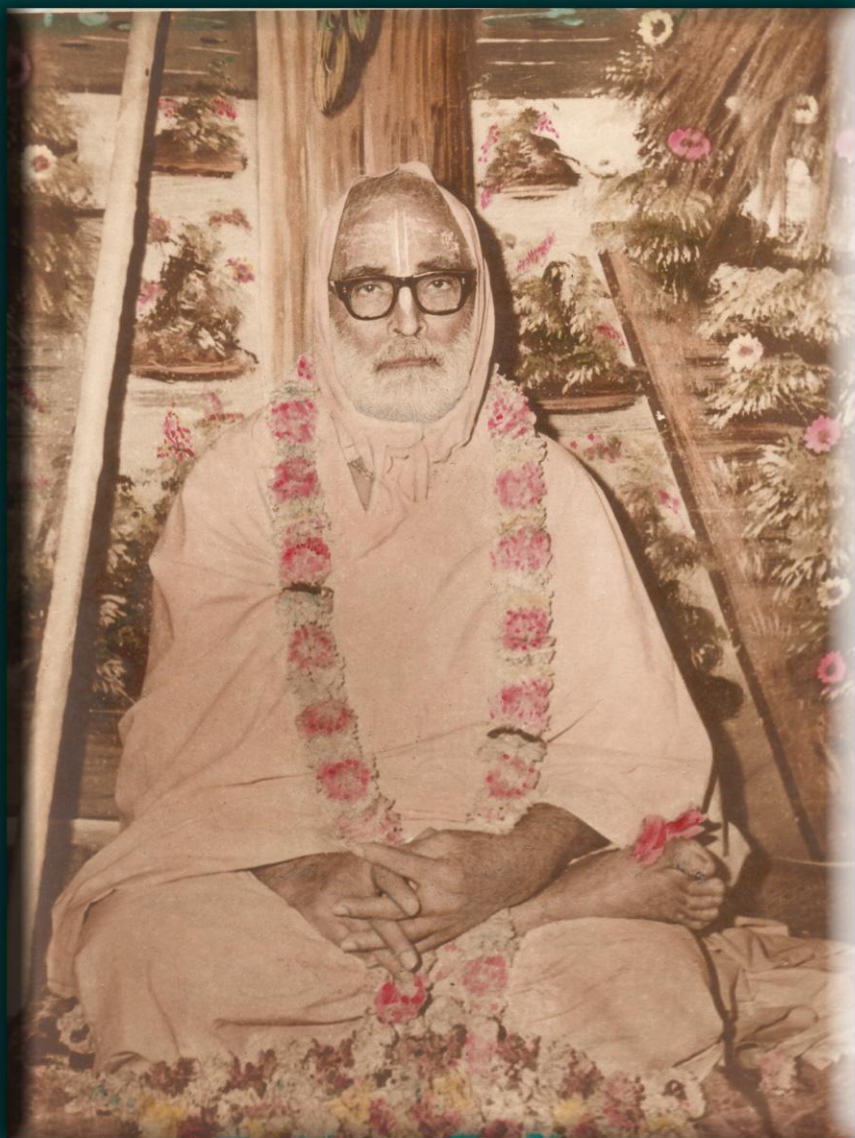
शतसज्जन वन्दित पादयुगं,
युगधर्म प्रचारक धूर्यजनं।
जनतासु सुभाषण शक्तिधरं,
प्रणमामि च माधव देव पदम्।। 1

अतिदीर्घ मनोहर गौरतनुं,
मृदुमंद सुहास्य युतास्य धरं।
उरुलम्बित हस्तसु रूपयुतं,
प्रणमामि च माधव देव पदम्।। 2

शिशुकालसु पाठ्यसु यत्न परं,
जननी सविधे श्रुत शास्त्रमतं।
परमार्थकृते परिहीन गृहं,
प्रणमामि च माधव देव पदम्।। 3

प्रभुपादपदेऽर्पित देह मतिं,
गुरुकार्य कृते यति वेशं धरं,
प्रणतेषु सदाहितकारी वरं,
प्रणमामि च माधव देव पदम्।। 4

प्रभुपादमनोगत कार्यरतं,
सुसमादृत भक्तिविनोद पदं।
रघुरूप सनातन लब्धपथं,
प्रणमामि च माधव देव पदम्।। 5

तरुधिकृत मार्जन शक्ति धरं,
लघु सेवन मात्रकहृष्ट हृदं।
हरिकीर्तन सन्तत दत्त मतिं,
प्रणमामि च माधव देव पदम्।। 6

मठमन्दिर निर्मित कीर्तिधरं,
गुरुगौर कथासु च नित्य रतं।
स्वयमाचरणे पर धैर्य परं,
प्रणमामि च माधव देव पदम्।। 7

करुणार्द्र हृदाहृत विष्णु जनं,
जननन्दित वन्दित कृत्य कुलं।
निज देश–विदेश सुवन्दयप पदं
प्रणमामि च माधव देव पदम्।। 8

गुरु पंक्ति सुरक्षण यत्न परं,

गुरुसोदरगौरव दान रतं।

अनुरक्तसु सेवक वाक्य धरं

प्रणमामि च माधव देव पदम्।। 9

भगवभ्दजनेह्यनुराग परं,

व्रत पालन कर्म सुदाठ्य युतं।

प्रभुपाद पदोद्दृत कारि जनं,

प्रणमामि च माधव देव पदम्।। 10

कृपायाक्षमतामपराधि जनं,

कलुषायुत सत्कसुदीन नरं।

सुपथे परिचालय सर्व दिनं,

प्रणमामि च माधव देव पदम्।। 11

श्रीश्रीप्रभुपादपद्म – स्तवकः

सुजनार्बुद – राधित – पादयुगं
युगधर्म – धुरन्धर – पात्रवरम्।
वरदाभय – दायक – पूज्यपदं
प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्।। 1

भजनोर्जित – सज्जन – संघपतिं
पतिताधिक – कारुणिकैकगतिम्।
गतिवञ्चित वञ्चकाचिन्त्यपदं
प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्।। 2

अतिकोमल – काञ्चन – दीर्घतनुं
तनुनिन्दित – हेम – मृणालमदम्।
मदनार्बुद – वन्दित – चन्द्रपदं
प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्।। 3

निजसेवक – तारक – रञ्जिविधुं
विधुताहित – हुंकृत – सिंहवरम्।
वरणागत – बालिश – शन्दपदं
प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्।। 4

विपुलीकृत – वैभव – गौरभुवं
भुवनेषु – विकीर्त्तित – गौरदयम्।
दयनीयगणार्पित – गौरपदं
प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्।। 5

चिरगौर – जनाश्रय – विश्वगुरुं
गुरु – गौरकिशोरक – दास्यपरम्।
परमादृत – भक्तिविनोदपदं
प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्।। 6

रघु – रूप – सनातन – कीर्त्तिधरं
धरणीतल – कीर्त्तित – जीवकविम्
कविराज – नरोत्तम – सख्यपदं
प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्।। 7

कृपया – हरिकीर्त्तन – मूर्त्तिधरं
धरणी – भरहारक – गौरजनम्।
जनकाधिक – वत्सल – स्निग्धपदं
प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्।। 8

शरणागत – किंकर – कल्पतरुं
तरुधिक्कृत – धीर – वदान्यवरम्।
वरदेन्द्र – गणार्चित – दिव्यपदं
प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्।।

परहंसवरं – परमार्थ – पतिं
पतितोद्धरणे – कृत – वेशयतिम्।
यतिराजगणौः – परिसेव्यपदं
प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्।।

वृषभानुसुता – दयितानुचरं
चणाश्रित – रेणुधरस्तमहम्।
महदद्भुत – पावन – शक्तिपदं
प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्।।

श्रील भक्तिरक्षक श्रीधर गोस्वामी
महाराज विचितम्

श्रीनृसिंहदेव जी की स्तुति

1-भाग 4 बार कीर्तन

इतो नृसिंहः परतो नृसिंह
यतो यतो यामि ततो नृसिंहः।
बाहिर्नृसिंहो हृदय नृसिंहो
नृसिंहमादि शरणं प्रपद्ये।।

2 – भाग 4 बार कीर्तन

नमस्ते नृसिंहाय प्रह्लादाह्लाद – दायिने।
हिरण्यकशिपोर्वक्षः शिलाटङ्क – नखालये।।

3 – भाग 4 बार कीर्तन

वागीशा यस्य वदने लक्ष्मीर्यस्य च वक्षसि।
यस्यास्ते हृदये संवित् तं नृसिंहमहं भजे।।

4 – भाग 4 बार कीर्तन

श्रीनृसिंह जय नृसिंह जय जय नृसिंह।
प्रह्लादेश! जय पद्मामुखपद्म – भृंग।।

4 बार पंचतत्व कीर्तन

श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु नित्यानन्द।
श्रीअद्वैत गदाधर श्रीवासादि गौरभक्तवृन्द।।

4 बार महामन्त्र कीर्तन

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

श्रीश्रीनाम – वन्दना

जयति जयति नामानन्दरूपं मुरारे –
र्विरमित – निजधर्म – ध्यान – पूजादि – यत्नम्।
कथमपि सकृदात्तं मुक्तिदं प्राणिनां यत्
परमममृतमेकं जीवनं भूषणं मे।।

श्रीबृहद्भागवतामृतम्

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

SGD
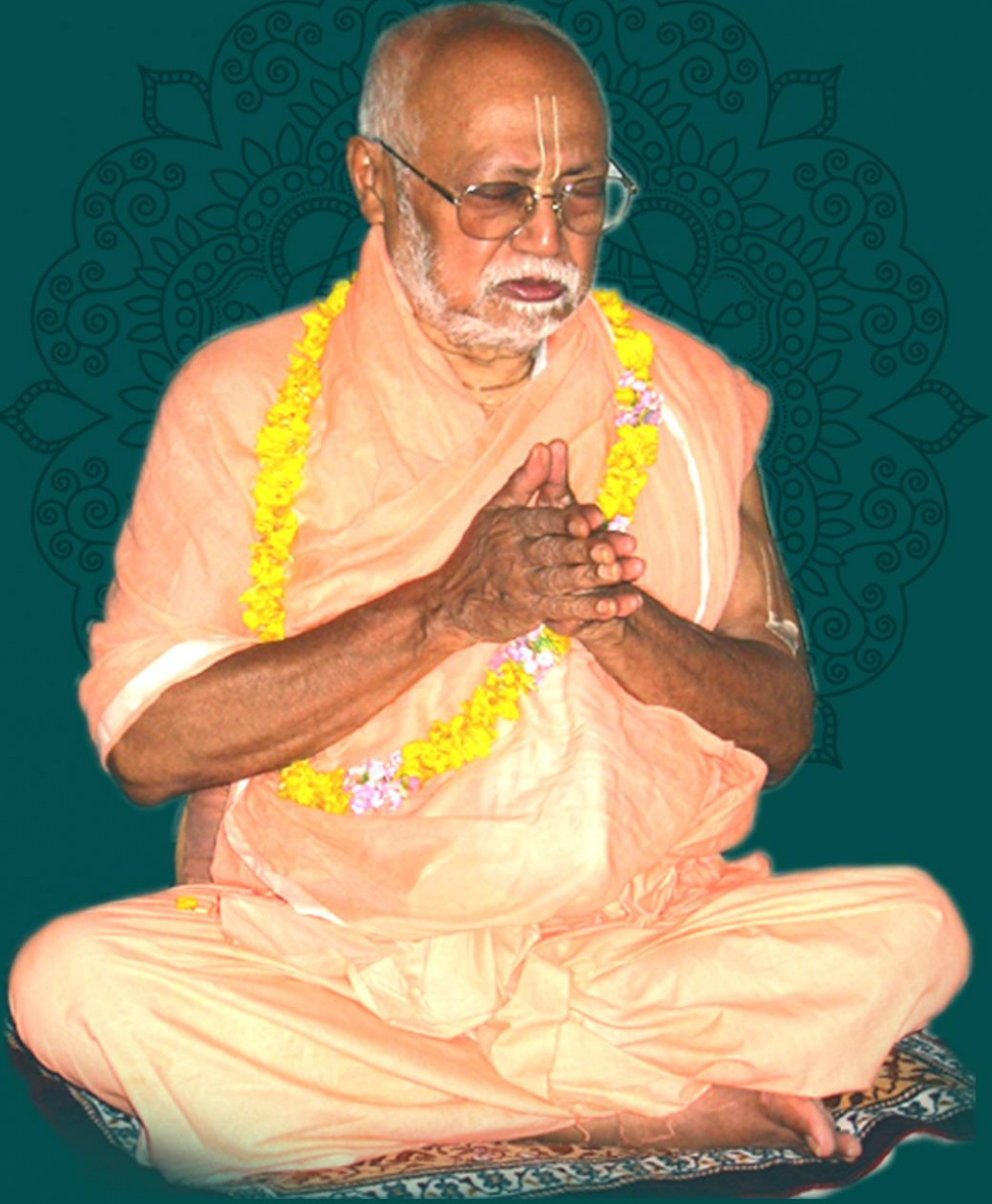
जय नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद
परमहंस अष्टोत्तरशत
श्री श्रीमद् भक्ति बल्लभ तीर्थ गोस्वामी
महाराज जी

जय – ध्वनि

जय श्रीश्रीगुरु – गौरांग – गान्धर्विका – गिरिधारी
जी की जय

जय श्रीश्रीगुरु – गौरांग – गान्धर्विका – गिरिधारी
श्रीराधामदनमोहन पंचतत्वात्मक
श्रीगौरहरि जी की जय

जय नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद
परमहंस अष्टोत्तरशत
श्री श्रीमद् भक्ति बल्लभ तीर्थ गोस्वामी
महाराज जी की जय

जय श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ के प्रतिष्ठाता
नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद
परमहंस अष्टोत्तरशत
श्री श्रील भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज जी की जय

जय श्रीचैतन्य मठ एवं
गौड़ीय मठ के प्रतिष्ठाता
जय नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद
परमहंस अष्टोत्तरशत
श्री श्रील भक्ति सिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी
प्रभुपाद जी की जय

जय नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद
परमहंस श्री श्रील गौरकिशोरदास बाबा जी
महाराज जी की जय

जय नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद
श्री श्रील सच्चिदानन्द भक्तिविनोद ठाकुर
जी की जय

जय नित्यलीला प्रविष्ट ॐ विष्णुपाद
परमहंस वैष्णव सार्वभौम
श्री श्रील जगन्नाथदास बाबा जी महाराज जी
की जय

जय श्री श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभु
जी की जय

जय श्री श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर
जी की जय

जय श्री श्रील नरोत्तम ठाकुर जी की जय

जय श्री श्रील श्यामानन्द प्रभु जी की जय
जय श्री श्रील श्रीनिवासाचार्य प्रभु
जी की जय

जय श्री श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी
जी की जय

जय श्रीरूप-सनातन-भट्ट रघुनाथ-
श्रीजीव-गोपाल भट्ट दास रघुनाथ
षड्गोस्वामी जी की जय
जय श्री श्रीलस्वरूप दामोदर गोस्वामी
जी की जय

जय श्री श्रील राय रामानन्द जी की जय

जय श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु–नित्यानन्द।
श्रीअद्वैत गदाधर श्रीवासादि–गौरभक्तवृन्द
जी की जय

जय श्रीराधा–मदनमोहन जी की जय

जय श्रीराधा–गोविन्द जी की जय

जय श्रीराधा–गोपीनाथ जी की जय

जय अन्तर्द्वीप श्रीधाम–मायापुर, सीमन्तद्वीप,
गोद्रुमद्वीप, मध्यद्वीप, कोलद्वीप, ऋतुद्वीप,
जह्नुद्वीप, मोदद्रुमद्वीप, रुद्राद्वीपात्मक
श्रीनवद्वीप धामकी जय

जय द्वादशवन – यमुना – मथुरा – वृन्दावन – गोवर्द्धन – राधाकुण्ड – श्यामकुण्डात्मक – श्रीब्रजमण्डल की जय

जय श्री पुरूषोत्तम धाम की जय

जय श्रीबलदेव – श्रीसुभद्रा एवं श्रीजगन्नाथदेव जी की जय

जय श्रील प्रभुपाद जी के आविर्भाव पीठ की जय

जय सर्व विघ्नविनाशनकारी श्रीनृसिंह देव जी की जय

जय श्रीप्रह्लाद महाराज जी की जय

जय श्री क्षेत्रपाल शिव जी की जय

जय श्री विश्ववैष्णव राजसभा की जय

जय चारों धाम की जय

जय चारों वैष्णव सम्प्रदाय की जय

जय श्री मध्व–रामानुज विष्णुस्वामी–
निम्बादित्य चारों वैष्णव आचार्यों की जय

जय आकर मठराज श्रीचैतन्य मठ की जय

जय श्रीगौड़ीय मठ और अन्याय शाखा मठ
समूह की जय

जय श्रीधाम–मायापुर ईशोद्यानस्थित मूल
श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ और तत्शाखा मठसमूह
की जय

जय श्रीहीरनाम संकीर्तन की जय

जय अनन्त कोटि वैष्णववृन्द की जय

निताई गौर प्रेमानन्दे हरि हरि बोल।

श्रीलगुरुदेव

SGD